शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 04 अंक– 13 जनवरी - मार्च - 2026 Impact factor– 4.5

राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं भाषिक चेतना का समावेशात्मक अध्ययन

राजेश कुमार प्रजापति
शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

सारांश-राजेन्द्र यादव हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने मध्यवर्गीय जीवन, व्यक्तिगत संबंधों और समकालीन सामाजिक विसंगतियों को अपनी रचनाओं में गहराई से चित्रित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके कथा-साहित्य (उपन्यासों तथा कहानियों) में निहित **सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं भाषिक चेतना** का समावेशात्मक अध्ययन किया गया है।

राजेन्द्र यादव की रचनाओं में स्त्री पात्र केंद्र में हैं। वे स्त्री को परंपरागत पीड़िता की भूमिका से हटाकर संघर्षशील, आत्मनिर्णय करने वाली और विद्रोही चेतना वाली स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक ढाँचों की कठोरता, वर्ग-भेद, पितृसत्ता, आर्थिक शोषण, राजनीतिक भ्रष्टाचार, न्यायिक विफलता तथा आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति की आलोचना करती हैं।

शोध में उनके कथा-साहित्य को केवल साहित्यिक कृति के रूप में नहीं, बल्कि समकालीन समाज का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज मानते हुए सामाजिक चेतना, स्त्री-विमर्श, राजनीतिक विघटन, आर्थिक असमानता और प्रयोगधर्मी भाषा-शैली के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया गया है। राजेन्द्र यादव का साहित्य यथार्थवादी, विचारोत्तेजक तथा आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में स्त्री-चेतना और सामाजिक जागरण का एक सशक्त उदाहरण है।

बीज शब्द -राजेन्द्र यादव,हिंदी कथा साहित्य,स्त्री चेतना,सामाजिक चेतना,राजनीतिक चेतना,आर्थिक चेतना,भाषिक चेतना,स्त्री-विमर्श,मध्यवर्गीय जीवन,यथार्थवाद।

प्रस्तावना- साहित्य में कथा साहित्य का स्वरूप काफी प्राचीन है। भारतीय साहित्य से लेकर पश्चिमी भाषाओं के सहित्य में भी गद्य एवं पद्य के रूप में कथा साहित्य विद्यमान था। कथा साहित्य के प्राचीनता की बात करें, तो यह मानव सभ्यता के विकास के साथ आगे बढ़ता गया जिसे लोक कथा एवं लोकगाथा के नाम से भी जाना जाता है। इसी कथा साहित्य के क्रम में समकालीन कथाकार राजेन्द्र यादव जी का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। इनका जन्म 28 अगस्त 1929 को उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में हुआ। हिन्दी साहित्य की विदुषी कथाकार मन्नूभंडारी और राजेन्द्र यादव पति पत्नी हैं। अब दोनो लोग नहीं रहे।

राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य के अन्तर्गत उनके उपन्यास तथा कहानियाँ उपलब्ध हैं। इनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवारों की कहानी का समावेश है। उन्होंने अतर्सम्बन्धों को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य के अगले चरण में कहानियाँ आती हैं। इनके संम्पूर्ण कथा साहित्य के अन्तर्गत नारी पात्रों को प्रमुखता दी गयी है तथा उनके सामाजिक-बौधिक स्वरूप का मूल्यांकन भी किया गया है। राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में स्त्री पात्रों का जीवंत चित्रण किया गया है। उनके शोषण का चित्रण भी बड़े ही मार्मिक रंग से किया गया है। स्त्री पात्रों के माध्यम से वे स्त्री की दशा एवं दिशा को चित्रित करते हैं।अत: हम यह कह सकते हैं कि राजेंद्र यादव का कथा साहित्य समकालीन साहित्य में समाज के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक है

शोध सारांश – राजेन्द्र यादव हिंदी कथा साहित्य के एक क्रांतिकारी और वैचारिक लेखक माने जाते हैं। उनका लेखन समकालीन सामाजिक संरचना, व्यक्ति की अंअांतरिक स्वतंत्रता और विशेष रूप से स्त्री की चेतना को केंद्र में रखता है। उनके कथा-साहित्य में स्त्री पात्र केवल कथा की पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि विमर्श की धुरी हैं।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब हिंदी कथा-साहित्य में नारी की भूमिका को लेकर नई चर्चाएँ उभर रही थीं, तब राजेन्द्र यादव जैसे लेखकों ने साहित्य में स्त्री को एक नई दृष्टि दी। उन्होंने स्त्री को केवल सहनशील, मर्यादित और त्याग की मूर्ति के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे एक सोचने, निर्णय लेने और विद्रोह करने वाली आत्मसंपन्न इकाई के रूप में चित्रित किया। उनके लेखन ने स्त्री के अनुभवों को उसकी दृष्टि से व्यक्त करने का प्रयास किया, जो हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के लिए एक नया आयाम था।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में स्त्री पात्र समाज द्वारा आरोपित भूमिकाओं के जाल से जूझती है। वे स्त्रियों के भीतर पल रहे द्वंद्व. आंतरिक संघर्ष और आत्मचेतना को बारीकी से उभारते हैं। वे यह मानते हैं कि स्त्री केवल संबंधों में बँधी हुई प्राणी नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र विचारधारा वाली इकाई है जो अपने अस्तित्व को लेकर सजग है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में उन स्त्रियों को स्वर दिया जो अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम हैं और पारिवारिक, सामाजिक, वैवाहिक ढांचे को चुनौती देती हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें अन्य कथाकारों से अलग करता है।

राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में स्त्री पात्रों की प्रस्तुति हिंदी साहित्य में एक नवीन चेतना का संचार करती है। उनकी स्त्रियों केवल प्रेम की प्रतीक्षा करने वाली नहीं हैं, वे स्वयं निर्णय लेती हैं. स्वयं रिश्तों की पुनर्व्याख्या करती हैं, और जब आवश्यक हो, तो विरोध करने में पीछे नहीं हटती हैं। उनका स्त्री विमर्श न तो केवल भावुकता में डूबा है और न ही उग्र प्रतिरोध में वह संतुलित है, यथार्थपरक है, और अनुभवजन्य है। आज जब स्त्री विमर्श की बहसें और भी व्यापक हो रही हैं, तब राजेन्द्र यादव का लेखन एक संदर्भ बिंदु बन जाता है। उनके स्त्री पात्र आज की नारी के आत्मबोध, अस्मिता और स्वतंत्र सोच का पूर्वाभास प्रतीत होते हैं।

हिंदी कथा-साहित्य में राजेन्द्र यादव एक ऐसे रचनाकार के रूप में उभरते हैं जिन्होंने जीवन, समाज, व्यक्ति और सत्ता-व्यवस्था के विविध आयामों को नए और साहसिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनका लेखन केवल कथा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समकालीन समाज की वास्तविकताओं पर तीखी दृष्टि डालता है। विशेषकर स्त्री जीवन, सामाजिक संरचना, राजनीतिक विघटन, आर्थिक दबावों और भाषिक प्रयोगधर्मिता के माध्यम से वे अपने समय की मानसिकता को उभारते हैं। उनके कथा-संसार में पात्र केवल घटनाओं के वाहक नहीं, बल्कि समय की बदलती चेतना के 'सक्रिय प्रतिनिधि हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य आधुनिकता, यथार्थ और सामाजिक बदलावों पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बनकर उभरता है। यह शोधपत्र उनके कथा-साहित्य में निहित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा भाषिक चेतना का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। राजेन्द्र यादव का कथा-साहित्य केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक दस्तावेज है जिसमें व्यक्ति, समाज, सत्ता और आर्थिक सांस्कृतिक व्यवस्था के कई आयाम समाहित हैं।

स्त्री चेतना- हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श को नई दिशा देने वालों में राजेन्द्र यादव का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने स्त्री को परंपरागत पीड़िता या सहनशील इकाई के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, विचारशील और आत्मनिर्णय करने वाली स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कहानियों में स्त्री की चेतना परिवार,

समाज और परंपराओं द्वारा लगाए गए बंधनों से टकराती है। वह अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और भावनात्मक दुनिया को व्यक्त करते हुए उन ढाँचों को चुनौती देती है जहाँ स्त्री की भूमिका पुरुष के इर्द-गिर्द निर्धारित की जाती है। ये स्त्री-जीवन की जटिलताओं, सामाजिक विडंबनाओं, राजनीतिक विसंगतियों, आर्थिक संघर्षों और भाषिक प्रयोगधर्मिता को जिस संतुलन और गहराई से प्रस्तुत करते हैं. वह उन्हें समकालीन हिंदी कथा-साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण रचनाकार बनाता है।

राजेन्द्र यादव स्त्री को केवल सामाजिक संदर्भ में नहीं, बल्कि उसकी मनोवैज्ञानिक यात्रा, भावनात्मक द्वंद्व और आत्मसम्मान के संघर्ष में भी चित्रित करते हैं। उनके यहाँ स्त्री प्रतिरोध करती है, निर्णय लेती है और अपने भीतर मौजूद शक्ति को पहचानती है। यही कारण है कि उनका स्त्री-विमर्श भावुकता नहीं, बल्कि यथार्थ और अनुभव पर आधारित ठोस विमर्श के रूप में सामने आता है। उनके पात्रों में महिलाएं केवल कथा का आधार नहीं, अपितु चर्चा का मुख्य केंद्र बिंदु हैं। राजेन्द्र यादव के कथा-साहित्य में स्त्री चेतना सामाजिक विमर्श का केंद्र रही, जहां महिलाओं को स्वायत्त निर्णयकर्ता और स्वयं को न्यायग्राहिता के रूप में दिखाया गया। उनके कार्यों ने नारी को पारंपरिक बंधनों से मुक्त कर संघर्ष तथा विद्रोही स्वर प्रदान किया।

उनकी रचनाओं में स्त्रियां आंतरिक द्वंद्वों से जूझतीं, स्वतंत्र अस्तित्व की खोज करतीं तथा पारिवारिक ढांचों को चुनौती देती हुई नज़र आती है। यह चित्रण भावुकता या अतिवाद से परे यथार्थवादी एवं अनुभव पर आधारित है।

भारतीय आधुनिक स्त्री-चेतना के निर्माण में सामाजिक और साहित्यिक आंदोलनों का महत्त्वपूर्ण योगदान है. भारत के विभिन्न समाज-सुधारकों ने स्त्री-प्रश्न को प्रमुख बना दिया है। स्त्री-चेतना को सहसिक रूप से अभिव्यक्त किया. इस तरह से आधुनिक युग में नवीन स्त्री-चेतना की शुरुआत हुई. हिंदी साहित्य में भी स्त्री-विमर्श की शुरुआत के साथ स्त्री-अभिव्यक्ति को नया स्वर और नई दिशा मिली. इसका स्वरूप क्या है? इसकी वर्तमान दशा और दिशा क्या है? इस शोध आलेख में इन्हीं प्रश्नों की पड़ताल की गई है. बीज शब्द स्त्री-चेतना, समाज और साहित्य, भारतीय नवजागरण, आधुनिक युग, स्त्री-स्वतंत्रता, स्त्री-विमर्श, स्त्री-आंदोलन, समाज-सुधार, पितृसत्ता, का क्या अभिप्राय है इसका सार्वभौमिक रूप से दिखाया गया है।

सामाजिक चेतना - समाज निरंतर परिवर्तनशील इकाई है। व्यक्ति और समाज के संबंध सहनिर्भर है समाज व्यक्ति को बनाता है और व्यक्ति समाज को बदलता है। राजेन्द्र यादव इस द्वंद्वात्मक संबंध को अत्यंत संवेदनशीलता से पकड़ते हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक ढाँचे की कठोरता, विसंगतियों, वर्गभेद, परंपरा और आधुनिकता के टकराव, नैतिक संकट और समूहगत दबावों की गहरी झलक मिलती है।

मनुष्य अकेला जन्म लेता है लेकिन वह आदत से सामाजिक होता है। मानव के लिए समाज आवश्यक है। अगर व्यक्ति समाज से मिलकर न रहे तो मानसिक रोगी हो जायेगा। अतः इससे बचने के लिए समाज की आवश्यकता होती है। मनुष्य का समाज से सम्बन्ध वंशानुक्रम होता है। जो एक पीढ़ी से अगली पीढी तक आता जाता रहता है। अत यह बात स्पष्टत कही जा सकती है कि व्यक्ति और समाज का अभिन्न सम्बन्ध है। समाज को व्यक्ति बनाता है और व्यक्ति में सज्जनता का विकास करना समाज की जिम्मेदारी है। व्यक्ति से समाज और समाज से व्यक्ति अपनी आवश्यकता के लिए एक दूसरे के पूरक है। अतः व्यक्ति और समाज की इस लगाव और जुड़ाव तथा वंशानुक्रम स्थानांतरण के आधार पर हम यह कहने की सामर्थ्य जुटा सकते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहते हुए ही अपना विकास करता है।

वे यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य केवल जैविक प्राणी नहीं, बल्कि विचारशील इकाई है जिसकी चेतना उसी सामाजिक वातावरण से निर्मित होती है जिसमें वह रहता है। यादव सामाजिक जीवन की जटिलताओं जैसे शोषण, असमानता, जातीय मानसिकता मानवीय पीडा और सामूहिक तनावकको यथार्थपरक और तीक्ष्ण ढंग से चित्रित करते हैं। उनकी कहानियाँ सामाजिक चेतना के निर्माण और विघटन दोनों को समान गहराई से समझती हैं। राजेन्द्र यादव हिंदी कहानीकारिता के नवाचारी एवं विचारोतेजक रचनाकार हैं, जिनके कार्य आधुनिक समाज की संरचना, व्यक्तिगत मुक्ति तथा नारी चेतना पर केंद्रित रहते हैं। समाज निरंतर बदलता रहता है, जहां प्रत्येक काल की अपनी विशिष्टताएं होती है. जैसे रीति-रिवाज, भोजन, भाषा, जीवनशैली एवं वस्त्र। व्यक्ति समाज की आधारभूत इकाई है. जिसकी चेतना विकास से सामूहिक प्रगति होती है. और नियमों द्वारा संचालित यह प्रक्रिया मानवीय आवश्यकताओं पर आधारित है। व्यक्ति एवं समाज परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं व्यक्ति समूह बनाता है जबकि समाज व्यक्तित्व गढ़ता है. जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं सांस्कृतिक तत्व सहायक होते हैं। यादव का दृष्टिकोण आधुनिक नारी अस्मिता का पूर्वसंकेत देता है। समाज की गतिशीलतासमाज सतत प्रकिया में विकसित होता रहता है, जहां रीति-रिवाज, जीवन पद्धति एवं वेशभूषा में क्रमिक परिवर्तन होते हैं।

राजनीतिक चेतना - राजनीतिक चेतना समाज और व्यक्ति के अधिकारों, कर्तव्यों और सत्ता-व्यवस्था के प्रति जागरूकता का परिचायक है। स्वतंत्रता के उपरांत भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षरण, भ्रष्टाचार, न्यायिक जटिलताओं और प्रशासनिक विलाई को यादव ने अपनी कहानियों में तीखे व्यंग्य और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया। 'लंघटाइम', 'रोशनी कहीं है, परी नहीं मरती, भाग गया' जैसी कहानियाँ प्रशासनिक भ्रष्टाचार और आम व्यक्ति की असहायता को उजागर करती हैं। राजनीति राज्य संचालन की नीतियों से जुड़ी नसों को संरक्षित करके शासन को मजबूत बनाती है। इन रचनाओं में न्यायालय की भ्रष्टता, नौकरी की मारामारी तथा बेतों द्वारा राजनीतिक विद्रोह का प्रतीकात्मक उन्मूलन का चित्रण प्रमुख है।

राजनीति की परिभाषा पिनाक एवं स्मिथ निम्न रूप में व्यक्त करते हैं- "राजनीति उन समस्त शक्तियों से सम्बन्धित है, जो राज्य के शासन उसकीतियों तथा कार्यों को संघटित करती एवं गढ़ती हैं।" इस तरह राजनीति सी भी समाज में उन सभी शक्तियों, संस्थाओं तथा संगठनात्मक प्रकारों से सबन्धित राजनीति होती है जो किसी समाज में सुव्यवस्था की स्थापना और उसके सदस्यों के सहभागिता का अभिप्राय को कार्यान्चति है तथा उनके मतभेदों का समाधान करने के लिए, उस समाज का अन्तिम सत्ता माने जाते हो।'

चेतना का अर्थ जानकार होने से है। चेतना मनुष्य के जीवन की प्रेरणा है सजगता द्वारा ही मनुष्य अपने तथा समाज के कामों को सम्पन्न करता है। डॉ. शुभलक्ष्मी राजनीतिक चेतना को स्पष्ट करते हुए लिखती हैं कि "शासन सूत्र सक्षम और सत्यनिष्ठ व्यक्तियों के हाथों में रहे, उसमें समस्त राष्ट्रजन सहभागी हॉ. अनिष्टकारी अथवा विध्वंसकारी ताकतों का प्रतिरोध होता रहे राष्ट्र के कण-कण के प्रति सर्वसामान्य घनिष्ठता को जागृत करें। राष्ट्रक्षति प्रत्येक नागरिक को दुखदायक एवं राष्ट्र समृद्धि आनन्दायक अनुभव प्रतीत हो, विविध जीवन पद्धतियों के आगे होते हुए भी राष्ट्र की गतिविधियों के समान स्तर की भागी बने। ये सब अंत में राजनीतिक चेतना के अन्तर्गत आती है।

वे बताते हैं कि कैसे सत्ता, धन और प्रभाव के गठजोड़ ने एक ऐसी व्यवस्था तैयार कर दी है जहाँ न्याय विलंबित ही नहीं, बल्कि कई बार विकृत भी हो जाता है। राजनीतिक हिंसा, वैचारिक कट्टरता और जनता की मौन पीड़ा भी उनकी रचनाओं में बार-बार उभरती है। प्रेत बोलते हैं जैसी कहानियाँ जनता की अव्यक्त व्याकुलता को प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त करती हैं। कुल मिलाकर यादव की राजनीतिक चेतना सत्ता-व्यवस्था के प्रति प्रश्न खड़े करती है और लोकतंत्र के भीतर

छिपे विरोधाभासों को प्रकाश में लाती है।

आर्थिक चेतना- आधुनिक समाज में, अर्थ जीवन का केंद्रीय तत्व बन चुका है। आर्थिक असमानताएँ, बेरोजगारी, महँगाई और पूँजीवादी प्रवृत्तियों मनुष्य के जीवन, संबंधों और मानसिकता को गहराई से प्रभावित करती हैं। राजेन्द्र यादव ने आर्थिक दबावों के कारण उत्पन्न टूटन, नैतिक समझौतों और मनोवैज्ञानिक क्लेश को बारीकी से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में गरीब, मध्यमवर्ग और धन्नासेठ तीनों वर्गों की आर्थिक मनोवृत्तियों स्पष्ट दिखाई देती है। किराये का काम कहानी आर्थिक लालच और वर्गीय शोषण की तस्वीर प्रस्तुत करती है। जहाँ लक्ष्मी कैद है' में आर्थिक लोभ और पितृसत्ता का गठजोड़ इतना विकृत रूप ले लेता है कि पिता अपनी ही बेटी को धन के प्रतीक के रूप में देखता है। यादव जी का आर्थिक चेतना-विश्लेषण आज के उपभोक्तावादी समाज की कई सच्चाइयों को उजागर करता है। स्वतंत्रता के बाद आर्थिक असमानता बढ़ी, भ्रष्टाचार फैला तथा श्रमिक वर्ग किस तरह शोषित हुआ, जैसा 'किराये का काम' एवं 'जहाँ लक्ष्मी कैद है में दिखाया गया। आधुनिक काल में धन समाज का मूल आधार है, जो सम्मान एवं शोषण का मापदंड बन गया है। आज देश में जितने जोर-शोर से टेक्नोलॉजी का विकास हो रहा है। कम आय वाले मध्यवर्ग की कुलीन लड़कियों बेहतर जीवन स्तर की तलाश में लगी हैं। जीवन स्तर की इस सौदर्यरीकारण में वे स्वयं अनैतिक रास्ते पर लेकर चली जाती है। आज का हर आदमी एक आर्थिक प्रतिद्वंद्वता में जी रहा है। वह बेहतर स्थिति में पहुँचने के लिए घूस लेता है, झूठ बोलता है, दूसरों के साथ बैमानी करता है और यहाँ तक कि स्वयं अपने मन की आवाज को भी अनसुनी कर देता है। अनैतिक यौन सम्बन्ध स्थापित करता है। अर्थ जीवन का सबसे प्रथम पहलू बन गया है। 'किराये का काम कहानी अर्थ-संवेदना से गतिशील है। धन को बटोरने के लिए व्यक्ति अन्धा बन जाता है। वह अपने कीर्ति, यश तथा इज्जत की परवाह बिल्कुल नहीं करता। सेठ जी और पण्डित जी दोनों आम से खास बने हुए हैं और उन्हें अतिरिक्त सम्मान की अपेक्षा बनी रहती है। किन्तु चवर्ती के लिए उनमें झगड़ा होता है और वे आक्रामक मुद्रा में एक-दूसरे को मारने को तत्पर दिखायी देते हैं। पण्डित जी सेठ को सुनाता है- 'अरे!

अर्थ पाने के लिए बाप इतना पागल हो जाता हैकि अपनी बेटी को भी मारने के लिए तैयार हो जाता है। जहाँ लक्ष्मी कैद है कहानी में रूपाराम् नामक बाप ने लक्ष्मी को कैद कर रखा है उसे कर इस बात का है कि लक्ष्मी का यदि त्याग कर दिया जाय और वह घर से चली जाय तो सारा धन उसके साथ चला जायेगा। अतः इसी अंधविश्वास के कारण लक्ष्मी की मनोदशा की ओर ध्यान न देकर अपने ही धन में मस्त होकर अन्याय करते हुए रूपाराम ने लक्ष्मी को एक कोठरी में बंद करके उसके आगे-पीछे पहरा लगा दिया है कि ताकि वह कहीं भाग न जाय।

भाषिक चेतना- भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम न होकर विचार, संस्कृति, मानसिकता और सामाजिक अनुभव का दर्पण है। राजेन्द्र यादव की भाषा आधुनिक संवेदनशीलता और समय की गति के अनुरूप विकसित भाषा है। वे उर्दू, अंग्रेजी और बोलचाल के प्रयोगों को स्वाभाविक ढंग से अपनी कथाओं में स्थान देते हैं। उनकी भाषा किसी भी प्रकार की कृत्रिमता या आडंबर से मुक्त है। पात्रों की जातीय सांस्कृतिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के अनुसार भाषा का चयन करना उनका महत्त्वपूर्ण शिल्प है। उनकी कथाओं की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और आधुनिक है, जो उनके समय की नई चेतना का प्रतिनिधित्व करती है।भाषा नजरविद भाषाभिव्याक्ति के लिए ध्वनि चिन्हों का योगदान सर्वाधिक है जबकि नेत्र ग्राह्य सत्ता गौड है। भाषा भाव का सौंदर्य तथा अभिव्यक्ति का प्रमुख उपकरण है। मानव के मन में स्थित रंगा-रंग संवेदनाओं को सक्षम बनाने की क्षमता भाषा में ही होती है। मनुष्य का मनोदशा भाषिक क्षितिज पर चढ़कर मूर्त रूप धारण करता है। भाषित

दीपशिखा में भावात्मक स्नेह के अनुसार ही लौ प्रस्फुटित होती है। वर्तमान समय में भाषा के यह सारे गुण कवि दिनेश कुशवाह में देखने को मिलती है। ये कहते हैं कि "मानव मस्तिष्क की सम्यक् पड़ताल भाषित पैमाने से ही सम्भव है। भाषा से ही भावापांक्तेय बनता है।

यादव जी का साहित्य पाठक को केवल कहानी नहीं देता, बल्कि विचार, प्रश्न और प्रतिरोध की नई दृष्टि प्रदान करता है। उनकी चेतना-प्रधान कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे उन समस्याओं और संघर्षों को उजागर करती हैं जो आज भी समाज में मौजूद हैं। इस प्रकार राजेन्द्र यादव का कथा-साहित्य हिंदी साहित्य में एक वैचारिक और कलात्मक उपलब्धि के रूप में स्थापित होता है। यह शैली यथार्थ को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। नामवर सिंह के शब्दों में भाषा सम्प्रेषण के पहले इन्द्रीयबोध का माध्यम है। इस प्रकार वह हमारे अनुभूति का भी नियमन करती है। जिसे हम अपना अनुभव और अपना अन्वेषण समझते हैं। उसमें कितना सार्वजनिक, भाषा का, यह बोध किसी भी विवेकशील मनुष्य की नींद खो देने के लिए काफी है। हर सक्षम रचनाकार को अपने युग के मुताबिक भाषाशैली रचनी पढ़ती है। बदलती हुई परिस्थितियों और अन्तर्राष्ट्रीय भावबोध के कारण भाषा पर युग का तकाजा होता है। भाषा के सामने रचनाकार को शब्दों की गहनता चुनौतियों थी। भाषा अपने सैद्धान्तिक मुहावरे छोडकर जिन्दगी के टटकेपन से जुड़ती है। इसी भाषिक शक्ति की अनुरूप शिल्प की नियत निखरकर सामने आया। यथार्थ का स्वरूप जटिल और दुरूह था।

यादव की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुतायत मात्रा में हुआ है। टूटना कहानी में लीना का एक पत्र की पंक्ति का पत्र है- कापट बी फारगेट व पास्ट। इस पत्र को निहायत निरुद्विग्र होकर किशोर ने समझा- क्या हम अतीत को भूल नहीं सकते। आजकल बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी के शब्दों को अत्यधिक श्रेष्ठता दे रहा हैं कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अभिव्यक्ति को चुस्त और व्यंजक बनाता है।

****

संदर्भ सूची-

1 शर्मा, रामविलाश। मानव सभ्यती का विकास। नई दिल्ली वाणी प्रकाशन। संस्करण 1983
2 सांकृत्यायन, राहुल। मानव समाज। इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन। संस्करण 1986
3. यादव, राजेन्द्र। वहाँ तक पहुँचने की दौड़। नई दिल्ली राधाकृष्ण प्रकाशन। संस्करण 1990
4 शर्मा, रामविलाश। मानव सभ्यता का विकास। नई दिल्ली वाणी प्रकाशन। संस्करण 1983
5 कुमार, राधा। स्त्री संघर्ष का इतिहास। वाणी प्रकाशन, संस्करण 2014।
6. स्वर्णलता। स्वातत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि। जयपुर विवेक पब्लिशिंग हाउस। संस्करण 1975
7. वसु, नगेन्द्र नाथ । (सम्पादक) 'हिंन्दी विश्व कोश। दिल्ली: बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन। संस्करण 1986
8. मुक्तिबोध, गजानन माधव। कामायनी एक पुनर्विचार। नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन। संस्करण 1981
9. कौशल्या। सामाजिक चेतना और श्रीलाल शुक्ल का पहला पड़ाव। दिल्ली सीमा पब्लिशिंग हाउस। संस्करण 2003
10. त्रिपाठी, रामप्रसाद। (सम्पादक) हिन्दी विश्व कोश' खण्ड-4। वाराणसी नागरी प्रचारणी सभा। संस्करण 1907
11. प्रसाद, कालिका। वृहत हिन्दी कोश। वाराणसी ज्ञानमण्डल लिमिटेड लंका। संस्करण 1992
12. शोभा, राणे। रघुवीर सहाय के कविताओं में राजनीतिक चेतना। कानपुर चंद्रलोक प्रकाशन। संस्करण 2004
13 यादव, राजेन्द्र। टूटना और अन्य कहानियों। दिल्ली अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड। संस्करण 1966
14. यादव, राजेन्द्र। यहां तक पढ़ाव एक। नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज। संस्करण 1990। मित्तल सुशीला। आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिका। नई दिल्ली: अर्चना पब्लिशिंग हाउस 1985।
15. एम. कोराली, प्रेमचन्द। राजेन्द्र यादव की कहानियों में विचारबोध तथा शिल्पबोध। वल्लभविद्यानगर, दर्पण प्रकाशन। संस्करण 2011
16. पाण्डेय, कैलाशनाथ। भाषा विज्ञाना का रसायन। इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन।
17. एम. कोराली, प्रेमचन्द। राजेन्द्र यादव की कहानियों में विचारबोध तथा शिल्पबोध । वल्लभविद्यानगर, दर्पण प्रकाशन। संस्करण 2011
18. यादव, राजेन्द्र। किनारे से किनारे तक। दिल्ली राजपाल एण्ड संस। संस्करण 1963
19. यादव, राजेन्द्र। अपने पार। नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस। संस्करण 1968